Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 423–432

A STUDY OF WEAPON USE IN ANCIENT HUMAN EVOLUTION

प्राचीन मानवीय विकास में हथियारों का उपयोग एक अध्ययन

Sadhna Kushwaha [1]

[1] Associate Professor, Swami Shraddhanand College, Delhi University

ABSTRACT

English: The use of arms and weapons is considered to have started with the development of human civilization. Humans produced it for their own security. But with the passage of time, its form kept changing and developing. In which, in many civilizations of the world, there was development in many forms from weapons to metallurgy. Its development in India after the Puranic civilization, the description of the weapons of the Indus civilization, Gupta period, Maurya period, Mughal period, Rajput period, the time of kings and the Maratha Empire etc. underlines the history of India and the development of human civilizations developed here. The relation of weapons is basically found in Hindi language books, because weapons have always been highlighted as a violent tendency. But with the change of time, it became a medium of security, sovereignty, protection and collective development.

The reference of which can be seen today in the technological era of information technology of the 21st century. In which, after the development of organized political, social structure between countries, the organizational tendencies of war are increasing institutionally. The main example of which can be seen in the form of the war between Central Asia and Ukraine Russia. Also, in the current scenario, killers are also being seen from the point of view of security psychology. Because in countries like India where hunger, poverty, unemployment and lack of basic facilities are prevalent, a large part of the GDP has been focused on buying arms and weapons in the arms race. In the context of the possibilities of development, this arms race will have to be reconsidered and highlighted. Because for the possibilities of sustainable and potential development, it is absolutely necessary for humans to remain on earth in a systematic way, its reverse is also equally relevant that it is extremely important for nature to remain for human development. Because in the current scenario, it is believed that the availability of nuclear weapons in the entire world is so high that the Earth can be destroyed 7 times..

Hindi: मानवीय सभ्यता के विकास के साथ ही अस्त्र और शस्त्र का प्रयोग माना जाता है। इसकी उपज मानव ने अपनी सुरक्षा के भाव से पैदा की। लेकिन समय परिवर्तन के साथ उसका स्वरूप परिवर्तित और विकसित होता चला गया। जिसमें विश्व की अनेक सभ्यताओं में अनेक हथियारों से लेकर धातु कर्म तक अनेक स्वरूप में विकास हुआ। इसका विकास भारत में पुराण कालीन सभ्यता के बाद सिंधु सभ्यता, गुप्त काल, मौर्य काल, मुगल काल राजपूत, राजाओं का समय और मराठा साम्राज्य आदि के अस्त्र-शस्त्रओं का वर्णन भारत के इतिहास को और यहां विकसित हुई। मानवीय सभ्यताओं के विकास को रेखांकित करता है। हथियारों का संबंध मूल रूप से हिंदी भाषा की पुस्तकों में मिलता है, क्योंकि हिंसात्मक प्रवृत्ति के रूप में हमेशा से हथियार को रेखांकित किया जाता रहा है। किंतु समय परिवर्तन के साथ यह सुरक्षा, संप्रभुता, संरक्षण और सामूहिक विकास का माध्यम बनता चला गया।

जिसका संदर्भ आज 21वीं शताब्दी के सूचना प्रौद्योगिकी के तकनीकी दौर में देखा जा सकता है। जिसमें देशों के बीच संगठित राजनीतिक, सामाजिक संरचना विकसित होने के बाद युद्ध की संगठनात्मक प्रवृतियां संस्थागत रूप से बढ़ रही हैं। जिसका प्रमुख उदाहरण मध्य एशिया और यूक्रेन रूस युद्ध के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही हत्यारों को वर्तमान परिदृश्य में सुरक्षा के मनोविज्ञान के भाव से भी देखा जा रहा है। क्योंकि भारत जैसे देशों में जहां भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी और बुनियादी सुविधाओं की वंचना मौजूद है। वहां हथियारों की दौड़ में जीडीपी के एक बड़े हिस्से को अस्त्र और शस्त्र खरीदने पर केंद्रित कर दिया है। विकास की संभावनाओं के क्रम में हथियारों की इस दौड़ को पुनर्विचार करके रेखांकित करना होगा। क्योंकि सतत और संभावित विकास की संभावनाओं के लिए मनुष्य का क्रमिक रूप से पृथ्वी पर बना रहना नितांत आवश्यक है इसका उल्टा क्रम भी

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.2083

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

उतना ही प्रासंगिक है कि प्रकृति का मनुष्य के विकास के लिए बना रहना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि वर्तमान परिदृश्य में यह माना जा रहा है कि संपूर्ण विश्व में न्यूक्लियर हथियारों की उपलब्धता इतनी अधिक है, पृथ्वी जैसे को 7 बार नष्ट किया जा सकता है।

1. प्रस्तावना

विश्व सहित संपूर्ण विश्व में मानवीय विकास की संभावनाएं मानव के भोजन की तलाश के रूप में शुरू हुई, जिसमें उसने इस तलाश को सरल और सुगम बनाने के लिए स्वयं को विचरण की अवस्था में रखा और घुमंतू प्रवृत्ति होने के साथ-साथ उसने स्वयं की शारीरिक थकान और जीवन की सुरक्षा के लिए थक्कर पेड़ पौधों और गुफाओं में छिपने की नई पद्धति को मानवीय आचरण में लाया। शैल या पहाड़ के निर्माण के दौरान विकसित हुई दरार और गुफाओं में यह सलाथिया आश्रम स्थल स्थापित हुए। जिन्हें शैल आश्रम भी कहा गया। मानव के द्वारा खोजे गए यह शैल आश्रम कहीं-कहीं इतने बड़े थे कि एक साथ 500 व्यक्तियों के बैठने का आश्चर्य निश्चित हो सकता था, इन्हीं गुफाओं में बैठकर आदि मानव ने अपने दैनिक जीवन की क्रियाओं का चित्र चित्रण किया। क्योंकि यह गुफाएं दुनिया में अनेक स्थानों पर पाई जाती हैं, भारत में इनका स्थान मध्य भारत की पहाड़ी क्षेत्रीय क्षेत्र शिवालिक हिमालय क्षेत्र पश्चिमी घाट आदि में हैं। दैनिक चित्रकारी को गुफाओं पर चित्रित करने का एक मानव में विचार विकसित हुआ। इन्हें शैल चित्र कहा गया। भारत में सैकड़ों स्थानों पर इन शैल चित्रों को प्रमाणित किया गया है। जिसमें भोपाल, विदिशा, रायसेन, होशंगाबाद, जबलपुर, सागर, गुना आदि जिलों में कई शैल चित्रों का उल्लेख प्राप्त होता है।

आदिमानव के पास वस्त्र व्यवस्था जैसी कोई सभ्यता नहीं थी और बरसात में बचने के लिए वृक्षों की छाल के साथ-साथ पशु पक्षी की खाल को लपेटकर स्वयं के शरीर को ढक लेता था। इसके साथ साथ उसने लकड़ी, पत्थर, सिंह, हाथी दांत, और हड्डी से बने हुए आभूषणों का उपयोग अपनी लोकसभा के लिए करना शुरू कर दिया। साथ ही पक्षी के पंख का आभूषण भी मानव ने विकसित करना शुरू कर दिया। हालांकि इस दौरान में भारत सहित अफ्रीका यूरोप के देशों में आदिवासी समुदाय के द्वारा आज भी उक्त शिव, हड्डी, लकड़ी, दांत, पत्थर, जानवरों के सींग, दांतों से बने हुए आभूषणों का उपयोग किया जाता है।

अलग अलग कालखंडो में मानव समुदाय का विकास एवम हथियारों का विष्लेशण

पुरातात्विक विदो के आधार पर कृषि की शुरुआत आज से लगभग 10000 वर्ष पहले भारत जैसे उपमहाद्वीप में हो चुकी थी, इस प्रकार जिसके फलस्वरूप मनुष्य ने अपने घूम घूम कर भोजन प्राप्त करने की संस्कृति को त्याग कर स्थाई बस्तियों में रहने का विकास निश्चित किया। खेती करने की इस कला में एक महत्वपूर्ण खोज यह थी कि मानव को भोजन की तलाश में भटकने की जरूरत नहीं रही। उसने एक जगह बस कर अपने सामाजिक सांस्कृतिक आयामों को निश्चित किया, लेकिन मानव को जब खाद्य सामग्री की कमी या अभाव का और गुजरता तो वह जमीन की खुदाई कर पत्थर लकड़ी हड्डी से बने हुए यंत्रों से जमीन से उत्पादन की नई प्रवृत्तियों के रूप में ढलने लगा धीरे-धीरे मिट्टी की निराई गुड़ाई और पौधे के पोषक तत्वों को ध्यान में रखते हुए उसने खाद बीज और पानी के स्रोतों के निकट स्वयं की बस्तियों का निर्माण करना शुरू किया। समय परिवर्तन के साथ कृषि के विकास ने मानव को विकास के नए क्रम में स्थापित कर दिया साथ ही मानव के द्वारा धातुओं की प्राप्त होने पर उसने कृषि यंत्रों के निर्माण को नई तकनीक और आकार देकर अपनी फसलों में लगने वाले समय को कम कर दिया, जिसके फलस्वरूप मानव की कृषि पर निर्भरता बढ़ती चली गई और कृषि के विषय में मानव का सभ्यता पूर्ण विकास निश्चित हुआ।

प्रारंभिक सभ्यता के विकास में आदिमानव के द्वारा हथियारों का उपयोग जानवरों के शिकार करने मांस काटने लकड़ी काटने कंदमूल खोजने आदि के रूप में किया जाता था, साथ ही आदिमानव अपनी रक्षा व सुरक्षा के लिए पत्थरों और धातु के बने हथियारों से जानवरों एवं अन्य समुदायों से रक्षा करने में भी उपयोग करता था। साथ ही आपके अविष्कार के बाद उसने आपको एक हथियार के रूप में जानवरों से रक्षा करने के रूप में

मानवीय विकास पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति 4600 मिलियन वर्ष पुराने मानी जाती है। इस धरती के पटल को विकास के चार चरणों में विभक्त किया गया है, जिसे दो युगों में विभाजित किया जाता है जिसमें नवयुग हिमयुग और अभी नवयुग उत्तर हिम युग कहते हैं, इसका पहला भाग ईसा पूर्व 2 लाख से ईसा पूर्व 12000 वर्ष तक और दूसरा भाग 12000 से लेकर आज तक के रूप में रेखांकित किया जाता है। यदि पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति 35 मिलीयन वर्ष पूर्व रेखांकित हुई है। यह कई लाख सदियों तक प्रकृति की संरचना तक ही सीमित रही, किंतु मानव की उत्पत्ति पूर्व युग और प्रारंभिक युग में दिखाई पड़ती है। मनुष्य के कई प्रकार लगभग 700000 वर्ष पहले दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका में चयनित हुए हैं। जिनका प्राचीन मानव के विकास में जिस जीव का विकास हुआ वह तकरीबन 30 मिलियन वर्ष पूर्व विकसित हुए। मानव जीवन के विकास में इसे ऑस्ट्रेलोपेथीकस नाम दिया गया। यह सब लैटिन भाषा में उत्पन्न होगा, जिसका मतलब दक्षिण बंदर रूपी प्राणी से है। इस प्रजाति में लंगूर और मनुष्य दोनों की विशेषताएं पाई जाती हैं। यह प्रजाति 55 हज़ार और 1.5 लाख वर्ष पूर्व के बीच में विकसित हुई। इस जिममें मनुष्य में पाए जाने वाले कुछ तत्व पाए गए मनुष्य होमीनिडइन के विकास को दर्शाता है। और ऑस्ट्रेलियापैथिक अस पूर्व होमिनिड के अंतिम चरण का परिचायक है। इस कारण इस प्रजाति को आध मानव कहा जाता है।

इसी क्रम में होमो हैबिलिस होमो इरेक्टस होमो सेपियंस का विकास क्रमिक रूप से विकसित हो सका इनकी पहचान इनके दिमाग की संरचना के आधार पर की गई। जिसे क्रमसरू 500 से 700 सेंटीमीटर घन सेंटीमीटर 800 से 1200 घन सेंटीमीटर और 1200 से 1800 सेंटीमीटर के रूप में पहचान निश्चित की गई।

भारतीय उपमहाद्वीप में मानव के विकास

भारतीय उपमहाद्वीप में मानव के विकास से संबंधित कुछ जीवांश पाए जाते हैं। जिसमें सबसे प्राचीनतम खोपड़ी के जीवांश भारत और पाकिस्तान में शिवालिक पहाड़ियों में पाए गए, यह खूब बढ़िया पोटवार पठार और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में बनवाई पत्थर में प्राप्त हुई इन कंपनियों को रामपीथिकस और शिवपीथिकस कहा गया। ऐसा निश्चित होता है कि हार्मोनिक की विशेषता के आधार पर वह लंगूर जैसे जीव प्रदर्शित होते हैं। रामपिथिकस मादा के रूप में निश्चित होती हैं।

अतः मानव के जीवन में कृषि की भूमि भूमिका न केवल प्रत्यक्ष बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से हथियारों पर निर्भर रही है। क्योंकि हथियारों की संज्ञा ने जहां मानव को शिकार करने की शक्ति के नए आयाम दिए, वही कृषि को करने की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। क्योंकि पत्थर के नुकीले हथियारों और धातु कर्म की ज्ञान होने के बाद धातु के हथियारों से न केवल कृषि बल्कि मनुष्य ने अपनी गति को भी बढ़ाया। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण खोज पहिए की खोज रही-

पहिए की खोज

प्राचीन मानवीय सभ्यता में प्रगति को नया आयाम देने के लिए खोज का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। क्योंकि मनुष्य के जीवन में यह खोज वरदान साबित हुई। इस खोज से मनुष्य के जीवन में विकास की नई गति प्राप्त हुई। जिसमें भारी चीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए कम समय में अधिक कार्य किया गया। गहराई से पानी को खींचने में आसानी हुई, वही चाप चलाने से मिट्टी के बर्तनों का निर्माण हो सका पशुओं के द्वारा ले जाए जाने वाली बैलगाड़ी का निर्माण कर मनुष्य ने अपनी प्रगति को दिशा दी।

नवपाषाण काल की उपलब्धता

नवपाषाण काल में कृषि की शुरुआत नवपाषाण काल में हजारों बनाने की विशेष तकनीक नवपाषाण काल के वजह नवपाषाण काल में कृषि एवं ग्रह कार्य के लिए अन्य उपकरण इस कालखंड में कताई, बुनाई की कला नवपाषाण काल में बर्तन बनाना, नवपाषाण काल में पशुपालन, नवपाषाण काल में मृदभांड बनाने की कला, नवपाषाण काल में उद्योग धंधों की शुरुआत के साथ-साथ व्यापारिक, आर्थिक श्रम

विभाजन, स्थाई जीवन को प्रोत्साहन सामाजिक व्यवस्था, धर्म कला, ज्ञान विज्ञान और कृषि की शुरुआत इस कालखंड में प्रभावी ढंग से हुई।

प्राचीन सभ्यता का कालखंड जितना प्राचीन है। उतना ही मानवीय विकास में अस्त्र और शस्त्रओं की कहानी है। वस्तुत हथियारों का उत्पादन उस कालखंड में प्रारंभ हो गया था। जब मनुष्य ने अपने आसपास की प्रकृति में भय के परिचय को पैदा किया और जंगली जानवरों के बचाव की चेष्टा में उसका संरक्षण हथियारों की ओर केंद्रित हुआ। यह आवश्यकता मानव के विकास के शारीरिक और व्यक्तिगत चेष्टा तक सीमित थी, किंतु हथियार की जगह अपने हाथ, पैर, दांत और नाखूनों का उपयोग मनुष्य के द्वारा किया जाता था, किंतु प्रारंभ आवश्यकताएं सीमित और संचित होने के कारण हथियारों की उपज की ओर मनुष्य का विकास नहीं बढ़ा एवम जब मानव भोजन के इन सहज प्राकृतिक शक्ति और साधनों का उपयोग कर स्वयं के लिए भोजन की उपलब्धता का संरक्षण एवं दूसरों से भोजन की चेष्टा और लालच में उसने बचाव के सहारे के लिए हथियारों की उपज को नया आयाम दिया।

पुरानी सभ्यता के विकास में जब आदमी झुंड में विचरण करता था। झुंड में भोजन की तलाश में इधर-उधर निकलता था, तब इन झूलों में अपने हितों को लेकर चुनौतियां शुरू हुई इन चुनौतियों के दौरान उसने बचाव और आक्रमणकारी परिस्थितियों के लिए इन हथियारों की जरूरत को सांझा और नए तरीके से अपने आसपास के संसाधनों के आधार पर हथियारों का विकास किया तत्कालीन परिस्थितियों में हथियार बनाने के लिए सर्वप्रथम पत्रों का प्रयोग किया गया, क्योंकि धातु की खोज तब तक सुनिश्चित नहीं हो सकी थी। इस प्रकार पाषाण युग में पत्थरों और जीव जंतुओं की खाल और प्राकृतिक तेल से बने हथियारों का उपयोग किया जाने लगा, अनेक पुरातत्ववादी और इतिहासकारों ने यह भी खोजा है कि मनुष्यों के द्वारा नरभक्षी शस्त्र, नरवंशी शस्त्रों का उपयोग भी संभवत हथियार के रूप में किया जाता था। इस खोज की प्रकृति और आवश्यकता उस दौर में पत्थर के उन हथियारों और औजारों के द्वारा निश्चित होती है। इसमें अनेक प्रकार की प्रवृतियां पाई जाती हैं, जिसमें पत्थर से ही तरसा हुआ बहु उपयोगी औजार हथियार बनाना शुरू हुआ। पत्थर युग के हत्यारों के विविध प्रकारों और पुरातत्व खोजों में पाए गए, उस कालखंड के हथियारों की उपयोगिता निश्चित होती है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता के अतिरिक्त ईसवी पूर्व रचित भारतीय पौराणिक ग्रंथों में अस्त्र शस्त्रों के विभिन्न रूप और प्रकार उल्लेखित हैं, उनकी शक्ति और उपयोगिता की चर्चा एक सीमा तक उनकी प्रमाणिकता के साथ वर्णित है।

प्रागैतिहासिक युग

प्रागैतिहासिक युग का अध्ययन करते हुए पुरातत्व विषय के जानकारों की नई खोज से स्पष्ट होता है कि मानवीय प्रजाति में लालन-पालन के साथ साथ खेल खिलौनों के बीच जीवन के गुजारने की प्रक्रिया के साथ-साथ बच्चों को कठोर कार्य भी दिए जाते थे, वे कम उम्र में ही उपकरणों और हथियारों का उपयोग करना सीख लेते थे। जिससे बड़े होकर वे अपनी दूसरे माननीय समुदायो एवं जंगली जानवरों से जीवन की रक्षा कर सकें। कनाडा स्थित अल्बर्टा विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर एम0 ली0 हल को औरागन के तट पर 717 ईसा पूर्व 1720 अपूर्व पुरानी वस्तुओं का अध्ययन करते हुए तीन भाले मिले, यह क्षेत्र अमेरिका महाद्वीप के चिनकू व सलीश भाषा लोगों का का क्षेत्र रहा है। इस अध्ययन के दौरान उन्हें टूटे 8 एयटेल भालो को फेंकने वाले हथियार मिले। इनका मानना था की तत्कालीन परिस्थितियों के हथियार न केवल बड़े थे, बल्कि छोटे संकीर्ण भी दिखाई पड़ते हैं। 2020 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार यह उल्लेखित हुआ कि वयस्कों के हथियार लघु संकीर्ण भी तैयार किए होंगे, जो कि युवा पीढ़ी शिकार करने में कौशल सीख सकें अर्थात परीक्षण के लिए छोटे हथियारों का प्रयोग किया जाता रहा होगा हालांकि आज के शिकारियों के खजाने से यह हथियारों की श्रंखला गायब हो चुकी है।

प्राचीन सभ्यता के विकास में सामाजिक और सांस्कृतिक विकास हथियारों की श्रंखला में साथ साथ चले हैं। जिसमें थाईलैंड के मानकी समाज के 4 वर्षीय बच्चे बड़ी सफाई से पशुओं की खाल उतारना को अलग करने का कार्य कर लेते थे। एक अध्ययन से पता चला है तंजानिया के हाजरा समाज में 5 वर्षीय बच्चे उत्कृष्ट कौशल से लबालब संग्रह कर्ता के रूप में कार्य करते थे और उनकी दैनिक कैलोरी खपत का आधा हिस्सा खुद इकट्ठा कर सकते थे। अतः स्पष्ट है प्राकृतिक प्रागैतिहासिक युग के बच्चे लघु प्रसंस्करण के औजारों और खाद्य प्रसंस्करण के औजारों का उपयोग किया करते थे, जिससे उनकी सामाजिक दिशा और दशा तय हुई।

मानवीय सभ्यता और हथियार-

मानवीय विकास की श्रंखला में जहां मनुष्य ने भोजन की सुरक्षा और स्वयं को प्रकृति और जंगली जानवरों से संरक्षण करने का आयाम विकसित किया वही बदलते कालखंड में मानव के द्वारा अपने आसपास के संसाधनों को हथियार बनाकर या जीवन को सरल व सुगम बनाने के लिए उपलब्ध साधनों को साधु के रूप में उपयोग किया इसमें सर्वप्रथम पत्थर की उपलब्धता निश्चित होती है। पत्थर मानव का प्रथम हथियार प्रमाणित होता है, क्योंकि पत्थर से जहां मनुष्य ने ऊंचे पेड़ पौधों से फल तोड़ने और जंगली जानवरों का शिकार करने के साथ-साथ दूसरे मनुष्यों से सुरक्षा के लिए उपयोग किया। वही आकस्मिक पत्थरों की रगड़ से उत्पन्न हुई अग्नि का अविष्कार मनुष्य के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन सिद्ध हुआ। अग्नि की उत्पत्ति मानवीय समुदाय में प्रथम अविष्कार के साथ-साथ हथियार और विकास के नए आयामों को परिवर्तित करने वाली सिद्ध हुई, जिससे मानव ने अपने खाने की गुणवत्ता को प्राथमिक रूप से बदला के साथ ही प्रकृति की मार और शरद ऋतु में पढ़ने वाली ठंड से बचने में उपयोग किया, हालांकि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मनुष्य के द्वारा प्रथम पाषाण हथियार के अलावा अग्नि एक हथियार के रूप में प्राप्त हुई। जिसने न केवल मनुष्य के सामाजिक जीवन में बदलाव की बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों को नया आयाम दिया। सामाजिक जीवन में अग्नि का महत्व सामूहिक रूप से जीवन की एक नई पद्धति को बढ़ावा देता है। जिसमें कबीलाई संस्कृति में सामूहिक भोज और सुरक्षा के लिए एक स्थाई संरचना स्थापित हुई। वहीं आर्थिक आयामों के लिए अग्नि के द्वारा धातु कर्म को मानव के द्वारा उपयोग में लाया गया, जिसने खेती और पशुपालन की प्रक्रिया में आमूलचूल बदलाव किए। क्योंकि शुरुआती दौर में मनुष्य कृषि की पद्धतियों से परिचित नहीं था, किंतु धातु काल आने के बाद मनुष्य में झूम खेती और गति खेती को अपनाया और समय परिवर्तन के साथ एक निश्चित भूभाग पर जहां प्राकृतिक परिदृश्य की परिस्थितियां कृषि की दृष्टि से अनुकूल थी। वहां स्थाई निवास बनाए जिसके फलस्वरूप मनुष्य ने अपने मानवीय जीवन की शुरुआत की दशाओं को प्रयोग और परीक्षण के आधार पर शुरू किया जिसमें उसने नए हथियार और कृषि उपकरणों को मूल में रखते हुए एक नई दिशा और दशा तैयार की।

कृषि और पशुपालन का विकास

पशुपालन और कृषि मानव की विचरण की परिस्थिति का परिवर्तन मनुष्य के द्वारा स्थाई बस्तियों का निर्माण एवं सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक गतिविधियों की स्थिरता के रूप में हुआ, जिसमें मानव ने सर्वप्रथम अपने आर्थिक आयामों को निश्चित करते हुए पशुपालन और खेती करने के प्रारंभिक तरीकों को खोजा। जिसमें उसने शिकार के साथ-साथ पशुपालन की उपयोगिता को समझा और महत्वपूर्ण स्थान दिया, किंतु कई इतिहासकारों ने उल्लेख प्रस्तुत किए हैं कि शिकार और पशुपालन मानव के द्वारा एक साथ किए जाने के प्रमाण भी ऐतिहासिक रूप में उल्लेख है। क्योंकि जहां मनुष्य ने शिकार करने के लिए कुत्ते खेती करने के लिए बैल दूध प्राप्त करने के लिए गाय, भैंस, बकरी और मांस प्राप्त करने के लिए भेड़ भैंसा और सवारी हेतु बैल भैंसओ, घोड़ा आदि के साक्ष्य मिलते हैं।

कृषि और हथियार

नवपाषाण काल उस कालखंड को सूचित करता है, जब मनुष्य ने पत्थरों को हथियार बनाकर स्थाई बस्तियां पशुपालन कृषि चाक आदि से निर्मित मृदभांड का उपयोग शुरू कर दिया। इस कालखंड में जलवायु वर्तमान परिदृश्य के समान थी, जिसके फल स्वरुप यहां पर गेहूं और जौ जैसी फसलों के उत्पादन का प्रमाण मिलता है उनमें दाने निकाल कर भोजन में प्रयुक्त करने की परंपरा और खाने को पका कर खाने की जानकारी स्थाई बस्तियों के रूप में प्राप्त होती है। आर्थिक कर्मों के रूप में पशुपालन और कृषि के आधार को रेखांकन किया गया है। अतः नवपाषाण काल के दौरान मानव ने स्वयं को सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक रूप से स्थापित कर लिया इसी क्रम में नवपाषाण काल के दौरान हजारों और तकनीक का विकास मानवी विकास के क्रम में नया दौर लेकर आया जिसमें मनुष्य ने अपने औजारों को पोलिस करके चमकदार बनाने और आर्थिक तौर पर परिवर्तन करते हुए खाद्य संग्रहण के रूप में खाद्य उत्पादक कर्ता की भूमिका का निर्वाहन करना शुरू कर दिया, हालांकि धातु कर्म के व्यापक संकेत नवपाषाण काल में नहीं मिलते हैं। हालांकि इस बात से भी इतिहासकारों और पुरातत्व के प्रमाण कर्ताओं का विचलन नहीं है कि ताम्र पाषाण काल की संज्ञा नवपाषाण काल को नहीं दी जाए। अर्थात नवपाषाण काल के आसपास ताम्र धातु के उपलब्ध होने की संज्ञा प्राप्त होती है। इस कालखंड में हजारों को नई दिशा व दशा देने के लिए नई तकनीकों का विकास हुआ जिसमें पत्थरों को और मिट्टी को किस कर पोलिस करके चमकदार

बनाया जाने लगा। जिसमें पत्थरों के ऊपरी परत को फलक के रूप में उतारा जाने लगा दूसरी अवस्था में उबड़ खाबड़ आभार को साफ कर उसमें धारदार तकनीक बनाई गई और अगली अवस्था में उस औजार को बड़े चट्टान और पत्थर पर घिसकर साफ करके उसकी कि नारियों को तीखा बनाया गया और अंतिम रूप से हत्यारों को पशुओं की चर्बी और वनस्पति तेल से पोलीस करके चिकना या पोलिस जार बनाया जाने लगा इन प्रमाणों के आधार पर नवपाषाण काल में मानव के द्वारा चिकने और चमकदार सुडोल औजारों का निर्माण शुरू हुआ। इन हथियारों में कुल्हाड़ी, छेनी, हथोड़ा, बसोले आदि प्रमुख है। इसके अतिरिक्त हल, दाने अलग करने का औजार, गिरडी तथा ब्लेड आदि सुनिश्चित है।

इन औजारों के आधार पर मनुष्य ने कृषि कार्य को उत्तम बनाते हुए गिरे कार्यों में भी उपयोग किया, इस काल में मानव ने अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन की जिन्हें गार्डन चाइल्ड के द्वारा नवपाषाण काल की क्रांति की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि पाषाण काल के मानव ने अपेक्षा कृत इस कालखंड में मूलभूत परिवर्तन कर जीवन को घुमक्कड़ की प्रवृत्ति से स्थाई प्रवृत्ति की ओर स्थापित किए। जिसमें पहले वे खाद्य सामग्री के लिए प्रकृति पर निर्भर रहता था। अब उसने अन्य को स्वयं उत्पादन करना शुरू कर दिया, हालांकि यह परिवर्तन अचानक और क्रांतिकारी नहीं था। यह क्रमिक और धीरे-धीरे प्रारंभिक रूप में विकसित हुआ, इस कालखंड को पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच का प्रयोगात्मक समय माना जा सकता है।

इस कालखंड से पहले पुरापाषाण से लेकर मध्य पाषाणकाल तक की संस्कृति का स्वरूप अफ्रीका, यूरोप और एशिया के महाद्वीप स्थलों में एक समान रूप से पाया जाता है, किंतु नवपाषाण काल में ऐसी संस्कृति नहीं दिखाई देती है। नवपाषाण काल में विकास के क्रम की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई पड़ती हैं। क्योंकि मानव ने तार्किक रूप से स्वयं को विकसित कर विकास की नई संख्याएं दी। इस क्रम में मदद भांड सहित नवपाषाण काल मृदभांड कला का आरंभ हुआ।

मृदभांड व औजारों का आधार-

मृदभांड रहित नवपाषाण के परमाणु के लिए जॉर्डन घाटी में स्थित जेरिको, एन ग़ज़ल, हंसलिया बीघा मेहरगढ़, गुफरान आदि स्थानों से प्रमाण मिलते हैं। इस संस्कृति का प्रारंभ 8000 ईसा पूर्व हुआ। इसमें सबसे महत्वपूर्ण स्थल जेरिको था, जहां सर्वप्रथम संस्कृति का विकास निश्चित होता है। इसके अतिरिक्त मृदभांड सहित नवपाषाण काल के प्रमाण भी इन्हीं क्षेत्रों में चिन्हित होते हैं। नवपाषाण काल की मृदभांड व्यवस्था मिस्र और मेसोपोटामिया में भी प्रमाणिक रूप से प्राप्त होती है। वहीं यूरोप में आल्पस पर्वत की श्रंखला के उत्तर में नवपाषाण काल के प्रमाण मिलते हैं।

उक्त संस्कृति निम्न स्तर पर रही है मध्य यूरोप में डैनवर नदी से बाल्टिक तक ध्यान, योग और विस्तुला के मध्य नवपाषाण काल की संस्कृति के प्रमाण मिलते हैं। यहां गेहूं, जो की कृषि एवं पत्रों के औजार तथा पशुपालन के अवशेष प्राप्त होते हैं। जर्मनी के राइनलैंड में शंख के बने आभूषण प्राप्त होते हैं। ध्यान, योग, डेन्यूब नदी से प्राप्त भांडुप पर चित्रकारी के प्रमाण मिलते हैं। साथ ही स्विट्जरलैंड, बेल्जियम तथा ब्रिटेन में रेशेदार पौधे और अन्य पैदा करने के लिए कृषि पद्धति का प्रमाण मिलता है। स्विट्जरलैंड में स्थित नवपाषाण कालीन मानव द्वारा में लकड़ी की छाल से अपना निवास स्थान बनाने के स्थाई प्रमाण प्राप्त होते हैं।

हथियारों और नई तकनीक के आधार पर नवपाषाण काल के प्रमुख स्थलों में जेरिका,े बिड्या, अबू हुरेथरा, एनग़ज़ल, मेरियाबिट, मेहरगढ़, गुकराल, श्यालक, जेरिमो अभी स्थान स्थान है।

हथियारों का निर्माण और उपयोग का विश्लेषण

प्राचीन भारतीय सभ्यता के विकास के दौरान हथियारों का आचरण बाला धनुष, तीर, गदा, तलवार, कुल्हाड़ी, लकड़ी वाले ढाल और अन्य भारत में प्राचीन और मध्ययुगीन युग के व्यापक रूप से उपयोग में किए जाते रहे है। हथियारों का उल्लेख मिलता है भारतीय सेना के द्वारा बाद में कई और हथियारों और आयुध विकसित किए, जो समय के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृतियों के फैलाव में फैले हुए थे। भारत में गोफाल, कशाला, चाकू, गुलेल तीर का प्राचीन सभ्यता के दौरान विकास हुआ एवम घेराबंदी के दौरान इन हथियारों का प्रयोग किया जाता था। भारत में हथियारों के विकास की एक विस्तृत श्रृंखला पाई जाती है। उसमें कुछ क्षेत्र के अद्वितीय हथियार हैं। प्राचीन सभ्यता के दौरान भारत के क्षत्रिय योद्धाओं के द्वारा तलवार वाले लकड़ी या धातु की डाल उसकी बांस छोटी और लंबी धनुष कुल्हाड़ी आदि मानव हथियारों

का उपयोग अपने राज्य में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को संरक्षित करते थे भारतीय पुरातत्व विभाग के द्वारा 130 से अधिक विभिन्न प्रकार के हथियारों को वर्गीकृत किया जा चुका है। जिसमें अलग-अलग वर्गों की उपवर्ग, वर्गीकरण प्रवृतियां मौजूद हैं। जिसके उपरांत देश में सभ्यता के विकास के साथ-साथ हथियारों की नई श्रंखला पैदा हुई।

भारत में उपयोग किए जाने वाले हथियारों का संक्षिप्त निम्नलिखित विवरण

तलवार

भारतीय उपमहाद्वीप में तलवारों और खंजर के कई प्रकार और आकृति पाई जाती हैं। जोकि अनमोल रत्नों सोने और चांदी से अलंकृत कर विस्तृत तीखे ब्लेड से निर्मित होती हैं। तलवारों पर नीचे की तरफ पकड़ सीमित होती है। भारतीय तलवारों को व्यापक रूप से राज्य और व्यक्तिगत सुरक्षा के रूप में पैदल सेना और घुड़ सवारों के द्वारा प्रयोग में लाया जाता रहा है, किंतु सिख धर्म के प्रभाव में आने के बाद इसे सिख अनुयायियों के द्वारा एक विशेष जन समुदाय के द्वारा धारण किया जाता है, जोकि आजकल धार्मिक प्रतीक का चिन्ह है।

बघनख

यह एक प्राचीन सभ्यता से विकसित हथियार है। जिसमें पंजे की आकृति वाली पकड़ उपस्थित होती है। जिसे हथेली के नीचे छुपाकर और पूर्व के ऊपर रखने के रूप में आकृति निश्चित की जाती है, इसमें चार या पांच तरह के घुमावदार अलग-अलग तीखे ब्लेड लगे होते हैं। यह हथियार मुख्य रूप से दुश्मन की त्वचा मांसपेशियों को उखाड़ने के काम आता है। हथियार का यह डिजाइन बाघ के पंजे की प्रेरणा के आधार पर बनाया गया है।

खंडा

खंडा एक दुधारी सीधी तलवार के रूप में होती है, जो कि एक लंबी तेज धार वाले दो मुंहे ब्लेड के रूप में चयनित होती है। जिसमें नीचे संक्षिप्त पकड़ होती है इसका उपयोग युद्धों में राजपूती सेनाओं के द्वारा किया जाता था, किंतु बाद में सिख, जाट और मराठों के द्वारा इसके नए आयाम विकसित किए गए।

कटार

कटार को सुमैया के नाम से भी जाना जाता है। यह भारतीय खंजर की सबसे लोकप्रियता वाला हथियार है। पूजा के समय इसका उपयोग शस्त्र पूजन में किया जाता है।

उरमि

उरमि एक अन्य प्रकार का भारत की लंबी तलवार के रूप में लचीली स्टील से बनी हुई धारदार हथियार की संज्ञा है, जोकि युद्ध में कई योद्धाओं के साथ अकेले लड़ने में उपयोग के सांसद के साथ-साथ मास में छेद करने के लिए पर्याप्त होती है। यह हथियार दक्षिण भारत में विकसित हुआ।

गदा

गदा प्रमुख रूप से भारतीय हथियार है, जिसका उल्लेख ना केवल प्राचीन साहित्य का विलोपन से ही निर्धारित होता रहा है। बल्कि वर्तमान परिदृश्य में भारत के अनेक क्षेत्रों में गधा की पूजा शारीरिक शक्ति और बल के आधार पर की जाती है, यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्रमुखता से पाया जाने वाला हथियार है। हालांकि वर्तमान परिदृश्य में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद भी इस हथियार की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। जिसे हिंद केसरी के नाम से जाना जाता है।

यह शक्तिशाली वार करने और दुश्मन को कुचलने के लिए एक लंबे हत्थे के साथ एक छोर पर भारी भार लगा होता है। जो कि मजबूत भारी संभाल आमतौर पर धातु या लकड़ी से बना होता है और सिर पत्थर लोहा का स्टील या तांबे से बना होता है। गदा का उल्लेख प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक महाकाव्य रामायण और महाभारत में मिलता है।

अग्नि का आविष्कार

अग्नि का आविष्कार मनुष्य के द्वारा एक लंबे समय तक अग्नि के परिचय से अछूता बना रहा, किंतु पत्थरों की रगड़ से सूखी लकड़ियों में आग लगने से या पत्थरों से हथियार बनाते हुए चिंगारी के कारण निकलने वाली आग को मानव ने पहले तो डर से अग्नि से दूरी बनाई बाद में सहजता होने के कारण मानव

के द्वारा मास को भूनकर खाने रात में आग जलाकर रोशनी प्राप्त करने ठंड के समय आग जलाकर गर्मी प्राप्त करना और जंगली जानवरों को भगाने में आग का प्रयोग किया।

चक्रम

यह एक तेज धार वाला धारदार हथियार है, जिसे लड़ाई में बलपूर्वक फेंककर मारा जाता है। अगर इसे चलाने वाला कुशल है, यह हथियार दुश्मन की सेना पर कहर बनकर टूटता है। इसका इस्तेमाल सैनिक हमेशा युद्ध की चरमकास्टर के रूप में करता है और प्रत्येक सैनिक अपने पास 2 चक्रों का उपयोग करता है। जिसे प्रत्यक्ष लड़ाई में उपयोग किया जाता है।

हलादी

तीन ब्लेड वाला यह हथियार राजपूती सेना में उपयोग में लाया जाता रहा है, जो कि एक समाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि से कुशल लड़ाकों के द्वारा ही इस्तेमाल में लाया जाता है।

फरसा

फरसा यह एक तरह की भारतीय परंपरागत रूप में विकसित हुई कुल्हाड़ी है। जिसका इस्तेमाल युद्ध में किया जाता है, यह लोहे से बनी होती थी जोकि सिंगल और डबल प्लेट के साथ जुड़ी होती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के आधार पर भगवान शिव का हथियार यह था। साथ ही इसे भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम के द्वारा भी उपयोग में लाया गया।

उरूम

यह एक बेहद नई तकनीक का हथियार था, जिसे मौर्य साम्राज्य में नई दिशा व दशा दी गई। जिसमें ब्लेड तेजधार और लचीले वाले लगाए जाते थे। जो कि बेहद कुशल लोगों के द्वारा ही इस्तेमाल में लाया जाता था, यह हथियार अगर चलाने में चलाने वाला कौशल नहीं है। तो यह स्वयं को नुकसान पहुंचा सकता था, इस हथियार को श्रीलंकाई वर्जन में 32 ब्लेडों के साथ पाया गया है।

दंड पटट

यह हथियार एक बार में कई सैनिकों के सिर धड़ से अलग करने की क्षमता रखता है। इसमें दो ब्लेड आपस में जुड़े होते हैं जोकि बेहद खतरनाक हैं, इनका इस्तेमाल मुगली सेना के द्वारा किया जाता था। इसका इस्तेमाल बख्तरबंद पैदल सैनिकों के खिलाफ भी किया जाता रहा है, जिसे शिवाजी महाराज के द्वारा चलाने का कौशल प्राप्त था।

खुकरी

यह बेहद तेज धार वाला मुड़ा हुआ ब्रेड होता है। यह खुकरी पूरे विश्व में गोरखा के हथियारों के रूप में जाना जाता है, इस हथियार को आधुनिक गोरखा सैनिकों के द्वारा अपनी यूनिफार्म का हिस्सा माना जाता है। साथ ही शादी विवाह में रीति रिवाज के तौर पर इसे साथ रखा जाता है।

विश्व विरासत कोष-

राखीगढ़ी-

विश्व की प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों में एक राखीगढ़ी तेज आर्थिक विकास के चर्म के कारण खत्म के कगार पर पहुँची गई। पुरातत्व वीदो ने हरियाणा स्थित राखीगढ़ी की खोज 1963 ई. में की। विश्व विरासत कोष में इसे मई 2012 रिपोर्ट में ख़तरे में एशिया के विरासत स्थल में 10 स्थानों को चिह्नित किया गया। रिपोर्ट के अनुसार इसके 10 स्थानों को अपूरणीय क्षति एवं विनाश के केन्द्र करार दिया गया। भारतीय पुरातत्व विभाग ने राखीगढ़ी में खुदाई कर एक पुराने शहर का पता लगाया था और तकरीबन 5000 साल पुरानी कई वस्तुएँ बरामद की थीं।

राखीगढ़ी में हथियारों की उपलब्धता के संदर्भ में उन्नति-

- लोगों के आने जाने के लिए बने हुए मार्ग,
- जल निकासी की प्रणाली,
- बारिश का पानी एकत्र करने का विशाल स्थान,
- कांसा सहित कई धातुओं की वस्तुएँ।

- प्रकृति और मानव जीवन

राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के शुष्क क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक स्थान है। राखीगढ़ी सिन्धु घाटी सभ्यता का भारतीय क्षेत्रों में धोलावीरा के बाद दूसरा विशालतम ऐतिहासिक नगर है। इसकी प्रमुख नदी घग्घर है, राखीगढ़ी का उत्खनन व्यापक पैमाने पर 1997-1999 ई. के दौरान अमरेन्द्र नाथ द्वारा प्रस्तुत किया गया। राखीगढ़ी से प्राक्-हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा युग इन दोनों कालों के प्रमाण मिले हैं। यहाँ से मातृदेवी चिंहित एक लघु मुद्रा प्राप्त हुई । राखीगढ़ी से महत्त्वपूर्ण स्मारक एवं पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

जिनमें हथियारों के विकास से निम्नलिखित विकास किया गया-

- दुर्ग-प्राचीर,
- अन्नागार,
- स्तम्भयुक्त वीथिका या मण्डप,

जिसके पाश्र्व में कोठरियाँ भी बनी हुई हैं, ऊँचे चबूतरे पर बनाई गई अग्नि वेदिकाएँ आदि मुख्य हैं।

जूनागढ़

अशोक के शिलालेख (आदेशपत्र)

गुजरात गिरनार जाने के रास्ते पर सम्राट अशोक द्वारा लगवाए गए शिलालेखों को देखा जा सकता है। ये शिलालेख विशाल पत्थरों पर उत्कीर्ण हैं। इन शिलालेखों में राजकीय आदेश खुदे हुए हैं। इसके अतिरिक्त इसमें नैतिक नियम भी लिखे हुए हैं। ये आदेशपत्र राजा के परोपकारी व्यवहार और कार्यो का प्रमाणपत्र है। अशोक के शिलालेखों, रुद्रदाम ने 150 ई. में तथा स्कंदगुप्त ने 450 ई. में ये अभिलेख खुदवाये थे। इस अभिलेख की, रुद्रदाम के अभिलेख को ही संस्कृत भाषा का प्रथम शिलालेख है।

कृष्ण भगवान से संबंधित उपरकोट किला

एतिहासिक आधार पर, इस किले का निर्माण यादवों ने द्वारिका में करवाया था। वहीं अपरकोट की दीवारें किसी-किसी स्थान पर 20 मीटर तक ऊंची है। किले पर की गई नक्काशी अभी भी सुरक्षित अवस्था में है। इस किले में बहुत सी रूचिजनक और दर्शनीय वस्तुओं में पश्चिमी दीवार पर लगी दो तोपे स्थापित है। इन तोपों को नीलम और कांडल के नाम से जाना जाता है। इन तोपों का निर्माण मिस्र में हुआ। किले के चारों तरफ 200 ईस्वी पूर्व से 200 ईस्वी तक की बौद्ध गुफाएं है।

2. निष्कर्ष का विश्लेषण एवम् मूल्यांकन

प्राचीन मानवीय सभ्यता में मनुष्य ने औजारों को पत्थरों को तोड़कर बनाया और यह पत्थर विशालकाय पत्थर के टूटे हुए टुकड़े थे, किंतु धीरे-धीरे मानव ने अपने समाज और कला की दक्षता में कौशलता प्राप्त कर सैकड़ों वर्षों के अनुभव और भौगोलिक परिवर्तन के कारण हजारों में बदलाव किए, जिसे बाद में मध्यपाषाण काल के दौरान औजारों का अधिक छोटे और अधिक पहने बनाने की परंपरा विकसित हुई, इसमें कठोर और मजबूत पत्थरों का प्रयोग किया जाने लगा। इन पत्थरों को मानव ने मनचाही आकृति के साथ-साथ नई तकनीक का विकास किया। प्रारंभ में हाथ से पकड़े जाने वाले पत्थरों का ही उपयोग औजार बनाने में किया जाता था, किंतु धीरे-धीरे हथियारों की हत्या लगाकर प्रयोग की कला मानव ने सीख ली। जिसके उपरांत औजारों को लकड़ी के हफ्ते में बांधकर उनकी शक्ति को बढ़ाया गया। नवपाषाण काल में या उत्तर पाषाण काल में छोटे पहने और अधिक शक्तिशाली हथियारों का निर्माण कर मानव ने हथियारों की नई श्रंखला पैदा की इन्होंने बाण के अग्रभाग में तथा कुल्हाड़ी के पहले भाग के साथ स्थान बनाया इस कार्यक्रम में पत्थरों की खिलाड़ियों हाथ के बनाए हुए बर्तन झोपड़ी के निर्माण और लघु पाषाण उपकरण का निर्माण किया गया। इस कालखंड में लगभग सैकड़ों वर्षों का समय लगा, क्योंकि इस कालखंड को लगभग 25 साल पूर्व तक निर्धारित किया जाता है। इसी कालखंड में सिंधु घाटी सभ्यता का विकास हुआ।

मनुष्य के विकास क्रम को पत्थर की गणना के आधार पर निर्धारित किया गया है। जिसमें पुरापाषाण काल मध्य पाषाण काल और नवपाषाण काल के रूप में रेखांकित किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से

मानवीय सभ्यता को विकसित करने के लिए नवपाषाण काल की संस्कृति से प्राप्त उपकरणों और संस्कृति के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएं निश्चित की गई हैं। इसी संदर्भ में प्राचीन मानवीय सभ्यता के विकास में हथियारों की भूमिका का अध्ययन नवपाषाण काल के आधार पर निर्धारित की गई हैं।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Sharma, Ramsharan, 2017, Ancient History of India, Oxford University Press, 1/22, Asaf Ali Road, New Delhi.

Srivastava, K.C., 2011, History of Ancient India, United Book Depot, 21 University Road, Allahabad.

Nilekani, Nandan, 2015, Picture of Emerging India, Penguin Books, Floor, Infinity Tower CDLF Cyber City, Gurgaon, India.

Ahuja Ram, 2000, "Bharatiya Samaj", Rawat Publications, Jaipur.

Aggarwal, G.K., S.S. Pandey, 1999, "Rural Sociology", Sahitya Bhavan Publishers and History Scooters Pvt. Ltd., Agra.

Chandra, Vipin, 2011, History of Modern India, Orient Blackswan, Pvt. Ltd. Asaf Ali Road, New Delhi.

Aggarwal, GK, SS Pandey 1999, "Rural Sociology", Sahitya Bhavan Publishers and History Scooters Pvt. Ltd., Agra.

Kalam A.P.J., Abdul, Rajan, Bais, 2014, India 2020 and Beyond, Penguin Books India, Gurgaon, Haryana.

Nitin Singhania, 2022, Indian Art and Culture, MC Grylls Education Pvt. Ltd., Chennai.